उपसंहार

मणिपुर के अतीत और वर्तमान में सामूहिक महिलाओं की सफल भूमिका देखी गई है। हालांकि राज्य के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में महिलाओं की प्रमुख योगदान के बावजूद समाज में उनकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है इस प्रकार महिलाओं की भूमिका और स्थिति के बीच एक बेमेल रिश्ता है जो वास्तव में बड़ी चिंता की बात है और इस पर विचार करने की आवश्यकता है। मणिपुर की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। मणिपुर की महिलाएँ घूँघट के पीछे नहीं रहती है। बाज़ार में भी माल के खरीद और बिक्री स्वयं करते हैं। इम्फाल के बाज़ार का दौरा किया जाये तो ज्ञात होगा कि किस प्रकार ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाएँ बाज़ार पर हावी है। बाज़ार में उनकी अपनी अनोखी भूमिका है। मणिपुरी महिलाओं ने हमेशा सामाजिक आंदोलनों में एक बहुत ही महत्वपूर्ण और सक्रिय भूमिका निभाई है।मणिपुर राजतंत्रीयप्रणाली के तहतआंदोलनों में महिलाओं की भूमिका का पता पूर्व ब्रिटिश काल से लगाया जा सकता है लेकिन 20 वीं सदी के प्रारम्भिक भाग में महिलाओं की सामाजिक आंदोलन एक संगठित तरीके से उभरा। लोकप्रिय पहली नुपिलान (महिलाओं का आंदोलन) के रूप में जाना जाता था, जो 1904 में हुआ। यह अन्यायपूर्ण ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ था।

महिलाओं की उच्च भावना के संघर्षों ने मणिपुर में कई प्रशासनिक सुधार किए और मणिपुर के पारंपरिक पुरुष प्रधान समाज में व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में भी महिलाएँ उभर कर आए। दूसरा 1939 की नुपिलान शोषण से दबे लोगों के ऊर्जा का सहज विस्फोट था।आंदोलन का मुख्य कारण राज्य के प्रशासन और प्राधिकरण द्वारा आर्थिक शोषण में अनियमितताओं और कदाचार से सीधे संबंधित था।आंदोलनों में महिला नेताओं और उनके समर्थकों को साथ-साथ जेल भेज दिया गया।सभी महिलाओं ने इस बात पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होने बाजार में कारोबार बंद कर दिया और ख्वाइरमबंद बाजार तीन साल के लिए बंद पड़ा रहा।अंततः वे प्रशासन में सुधार लाने में सफल रहे। यह महिलाओं कीराज्य में आंदोलन के फैलने के साथ राजनीतिक और राष्ट्रीय चेतना की नई प्रवृत्ति के उद्भव में एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

माइरा पाईबी (मशाल वाहक) आंदोलन मणिपुर में एक महत्वपूर्ण महिला आंदोलन है। यह मणिपुर में एक और सामूहिक महिलाओं की शक्ति का एक मिसाल है।यह 1980 के दशक में शुरू हुआ

और अभी भी सक्रिय रूप से अपना काम कर रही है। शराब और ड्रग्स के चंगुल से लोगों को बचाने के लिए महिलाओं ने इस आंदोलन का शुभारंभ किया था। यह आंदोलन अब मानव अधिकारों के लिए एक प्रमुख संघर्ष बन गया है। माइरा पाईबी की भूमिका की वजह से एचआईवी/एड्स,मानव अधिकारों के उल्लंघन और अन्य सामाजिक समस्याओं को तेज़ी से हल करने की प्रक्रिया में सफलता हुई है। महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थानोंके रूप में माइरा पाईबी समूह प्रगतिशील सामाजिक परिवर्तन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण साधन बन गया है।

मरुप या सहकारी आंदोलन आय पैदा करने के लिए महिलाओं के नेतृत्व में एक और महत्वपूर्ण आंदोलन है।शुरुआती दिनों से मणिपुर के समाज में मरूप एक सामाजिक-आर्थिक सहयोग की प्रणाली के रूप में जाना जाता रहा है और राज्य भर में अब तक सफलतापूर्वक तक जारी है। मरूप स्वयं सहायता समूह का एक प्रकार है जो एक समूह के रूप में एक समान आधार पर लाभ बाँटने की एक आर्थिक गतिविधि का काम करता है। यह आम आर्थिक जरूरतों के साथ व्यक्ति का संघ भी है। यह सदस्यों की मौजूदा आय सृजन की गतिविधि को मजबूत बनाने और सदस्यों की एक नई गतिविधि को शुरू करने में सदस्यों की मदद करता है।इससे वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र ही नहीं बल्कि उनको वित्तीय योगदान के साथ उनके परिवारों को भी मदद मिलती है। इनके सदस्य सेवा और उत्पादन दोनों गतिविधियों में लगे हुए हैं। समूहों की आय पैदा करने में मुख्य गतिविधियों में अगरबत्ती, पापड़, गुड़िया बनाना, हथकरघा/हस्तशिल्प, विभिन्न मिठाई आइटम की तैयारी, फल और सब्जी परिरक्षण इत्यादि आते हैं। मरूपमणिपुर में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सबसे अच्छा आधार रहाहै।वे राज्य के आर्थिक विकास के लिए बड़ी ताकत हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र जो सुर्खियों में हैं वो महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी है।मणिपुर की महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का स्तर काफी कम है। हालांकि स्थानीय स्वशासन में उनकी भागीदारी जमीनी स्तर पर लोकतंत्र की सफलता के लिए एक सकारात्मक संकेत है।यह ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया में एक प्रमुख सफलता लाएगा।

मणिपुर की महिलाओं ने इस प्रकार समाज के सामाजिक-आर्थिक बदलाव और उत्थान में काफी योगदान दिया है। मणिपुर में सामूहिक महिलाओं की शक्ति की ऊपर केस्पष्ट उदाहरणों-नुपिलान, माइरपाईबी और मरूप के माध्यम से निश्चित रूप से एक पाठक को यही ज्ञात होगा कि इन आंदोलनों की वजह से महिलाओं का समाज में एक उच्च स्थिति है लेकिन दुर्भाग्य से वास्तविकता कुछ हद तक

दूसरीतरह भी है।समाज पितृसत्तात्मक व्यवस्था के पेट में अभी भी है। पुत्र की पसंद आज भी प्रचलित है। आज भी कुछ रस्में ऐसी है जहाँमहिलाओं की भागीदारी अपवित्र माना जाता है और वहाँ उनकी भागीदारी प्रतिबंधित है। महिला बच्चे को जन्म देते हैं। वे एक साथ माँ और पत्नी की भूमिका निभा रही है। वे खाना पकाने,मरम्मत,सिलाई जैसे घरेलू काम करते हैं। वे पुरुषों की देखभाल और पुरुष के अधीनस्थ में रहते हैं। उन्हें काफी हद तक उच्च व्यवसायों से और सत्ता की स्थिति से बाहर रखा गया है।प्रतिष्ठा,धन, शक्ति और शक्ति लिंग भूमिका के संदर्भ मेंमहिलाओं के लगभग हमेशा स्थिति बहुत अच्छी नहीं रही है। यहाँ शिक्षा महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं तो उसमें वैयक्तिक रूप से एक आदमी ही शिक्षित होता है परंतु जब आप किसी औरत को शिक्षित करते हो तो वह अपने साथ पूरे परिवार को भी शिक्षित करता है।

एक दिलचस्प तथ्य यह भी है कि मणिपुर के लिंग अनुपात कई अन्य भारतीय राज्यों से बहुत ऊपर है। दहेज हत्या,बलात्कार और छेड़छाड़ के मामले मणिपुर में इतनी अधिक नहीं हैं। यहाँ महिलाओं से छेड़छाड़ और घरेलू हिंसा हुई है जो एक अस्वस्थता का लक्षण भी है कि मणिपुर की महिलाओं को समाज में उचित स्थान नहीं दिया गया। सामान्य रूप से समाज में पुरुषों के रवैये में बदलाव की विशेष ज़रूरत नहीं है। अब समय आ गया है कि हम उन महिलाओं की सम्मान करे जो सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक राजनीतिक और खेल के क्षेत्र में भी अपना योगदान दर्ज कराते हैं। मणिपुर की महिलाएँ समाज के विकास और प्रगति का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण कारक है अतः उन्हे समाज में एक उच्च दर्जा मिलना चाहिए।

मणिपुर में महिलाओं ने हमेशा राज्य के इतिहास में उत्कृष्ट राजनीतिक भूमिका निभाई है। कई महिलाओं को अभी भी उनके साहस, न्याय की भावना, राजनीतिक और प्रशासनिक क्षमताओं के लिए याद किया जाता है। हम अब ठीक तरह से निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि महिलाओं की आंदोलन या नुपिलान मणिपुर के औपनिवेशिक इतिहास में एक महान मील का पत्थर साबित हुआ। हालांकि आंदोलन महिलाओं द्वारा ही शुरू किया गया था और राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था में विशेष रूप से लोगों के जीवन के हर पहलू में भारी सकारात्मक प्रभाव लेकर आया। आंदोलन की अद्वितीय प्रकृति यह थी कि यह अनायास ब्रिटिश सरकार के चावल की नीति और बाहर के व्यापारियों के एकाधिकार के खिलाफ शुरू हुआ था परंतु बाद में आंदोलन का चरित्र ही बदल गया और इसने राज्य में संवैधानिक और प्रशासनिक सुधारों के लिए एक मजबूत आंदोलन का रूप ले लिया। परिणामस्वरूप दूसरे विश्व युद्ध

के अंत तक एक नए मणिपुर का उद्भव हो गया था। यह कहना गलत नहीं होगा कि एक जिम्मेदार सरकार की स्थापना के लिए बहुत सारे विचार महिलाओं द्वारा सफलतापूर्वक राज्य की भूमि पर लाया गया था। यह परिवर्तन इस राज्य के निडर महिलाओं के द्वारा किया गया था।

दूसरी ओर रानी गाइदिन्ल्यू ने ब्रिटिश शासन के स्थान पर नागा राज स्थापित करने के लिए अंग्रेजों के खिलाफ स्वतन्त्रता संघर्ष का नेतृत्व किया। हालांकि रानी अपनी प्रयास में सफल नहीं हो पाई। कम उम्र में ही उन्हे बंदी बनाकर उनकी गतिविधियों के लिए आजीवन कारावास की सज़ा दी गई।

मणिपुर की महिलाओं ने राज्य को दर्जा दिलाने वाले आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस प्रकार यह आंदोलन दिखाता है कि किस प्रकार महिलाओं ने आंदोलनों में शामिल होकर लोगों की बुनियादी राजनीतिक अधिकार के लिए संघर्ष किया। एक और आंदोलन नशा बंद का आंदोलन है। इस आंदोलन का उद्देश नशा का निषेध है। यह आंदोलन उस प्रतिबद्धता की भावना का प्रतीक है कि वे किस प्रकार समाज के अंदर सभी के लिए एक स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था को हासिल करने की दिशा में है। उनकी निषेध अभियान ने समाज में शराब की खपत की समस्या को काफी कम किया है। उनका प्रयास शराब और अन्य मादक दृव्यों के हानिकारक परिणामों के बारे में लोगों के बीच जागरूकता पैदा करना है जिस पर बड़े पैमाने पर आज तक परिवार और समाज निरंतर कार्य कर रही है। जिसने राज्य की पहाड़ियों में भी एक अच्छा सकारात्मक प्रभाव बनाया। जब मणिपुर राज्य का दर्जा के अनुदान के साथ राज्य का दर्जा आंदोलन का तार्किक अंत हो गया तब 1980 के दौरान नशा बंद आंदोलन एक और अधिक शक्तिशाली सक्रिय और तत्काल आंदोलन के रूप में लोगों के मानव अधिकारों के संरक्षण के लिए माइरा पाईबी के रूप में विस्थापित हो गया।

इसी तरह पहाड़ियों में नागा महिलाएँ और कुकी महिलाएँ उनसे संबन्धित जनजातियों के संरक्षक है। नागा, कुकी संघर्ष के दौरान जहाँ समाज में जातीय सफाई के नाम पर बर्बरता को नग्न अनुपात में फैलाया गया वहाँ दोनों जाति की महिलाओं ने इसको खत्म करने में एक निर्णायक भूमिका निभाई यहाँ तक कि बच्चों को भी नहीं बख्शा गया। यह वह क्षण था जब महिलाएँ पहाड़ी रास्तों से चलते हुए (कभी-कभी लगातार 3-4 दिन तक चलकर) सशस्त्र लड़ाकों और भूमिगत संगठनों के पास एक दूसरे की हत्या को रोकने की दरख्वास्त लेकर जाते थे। चुराचांदपुर जिले में कुकी और पइते समुदायों के संघर्ष के दौरान से ही कुकी मदर्स असोसिएशन संघ को औपचारिक रूप से शांति और सामाजिक सुधार के संघ के रूप से जाना जाता है। इस संघर्ष में दोनों समुदायों की महिलाएँ घर से बाहर निकलकर आई और शांति

स्थापित का काम किया। उन्होने संयुक्त रूप से लोगों से इस हिंसा को समाप्त करने की अपील की। वे अपने उद्देश्य में बहुत स्पष्ट थे। नागा-कुकी संघर्ष के मुद्दों को भी कुकी मदर्स एसोसिएशन ने जागरूकता और आपसी समझ बनाकर अहिंसा के माध्यम से हल करने की माँग की। इन महिलाओं ने कानूनी शिक्षा और सोसाइटी के सहयोग से विभिन्न इलाकों में जागरूकता लाने के लिए संगोष्ठी व शांति अभियान किए। नागा वुमेन असोसिएशन ने भी इस अवसर पर शांति और सद्भाव लाने में कुकी बहनों का साथ दिया। शांति और सद्भाव और का कार्यक्रम उन्होने गाँव-गाँव जाकर किया। जातीय संघर्ष को खत्म करने के उपदेश देकर उन्होने निर्दोष गाँव वालों की रक्षा भी की। दूसरी तरफ ड्रग्स,शराब और जुआ को समाज में समुदायों को प्रभावित करने के लिए फैलाया जाने लगा। माइरा पाईबी ने उनके खिलाफ खड़े होकर उनका मुक़ाबला किया।

आज मणिपुर के वर्तमान परिदृश्य में हर समुदाय में महिलाओं की अपनी एक मजबूत संगठन है। मेते समुदायों के बीच माइरा पाईबी, नागाओं के बीच नागा वुमेन असोसियशन और कुकी समुदायों का कुकी वुमेन असोसियशन है। परंतु दुर्भाग्य से हम इन समुदायों के बीच बातचीत को बहुत ही कम देख पाते हैं। वे ज़्यादातर सामान्य विकास की रणनीति पर ध्यान दिए बिना स्वतंत्र रूप से अपनी ही समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित कर अपना काम कर रहे हैं और यह अलगाव के समय ही काम करते हैं। हमे इस मामले को और अधिक ध्यान से देखने की ज़रूरत है। कार्यशाला,संगोष्ठियाँ इत्यादि के मदद से लोगों के सामने सबके साथ काम करने की प्रस्तावना को रखने के साथ विकास की एक आम रणनीति को तैयार करने की आवश्यकता है। उनके आम उद्देश्य मणिपुर के सभी समुदायों के लिए कल्याणकारी होगा।

विभिन्न महिला समूहों का अपने समुदायों में भारी प्रभाव के बाद से लगभग सभी संगठनों, राजनीतिक दलों सहित भूमिगत संगठनों ने भी उनके समर्थन प्राप्त करने की कोशिश की। यहाँ तक कि सुरक्षा बल उनके प्रभाव के बारे में पता लगाकर उनको अपनी ओर करने की कोशिश करते है। ऐसे में राज्य में उनकी ताकत की भूमिका को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। जब उन्हें कभी लगता है कि किसी के साथ अन्याय हुआ तब वे उन्हें बदले में अपनी दृढ़तापूर्वक समर्थन और सहानुभूति देते है।

मणिपुर में सभी महिला संगठन बहुत मजबूत और शक्तिशाली निकाय है। हर कोई इस राजनीतिक दल में शामिल होने के लिए अपने बहुत छोटी से छोटी व्यक्तिगत समस्याओं को भी लेकर आते हैं। जो अपने स्वयं के राजनीतिक स्वार्थ के उद्देश्य से इन संगठनों में घुसपैठ करने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार इन संगठनों का राजनीतिकरण करने की कोशिश करते हैं। जो समाज के निडर प्रहरी के

रूप में महिला समुदायों की प्रभावशीलता को कम कर सकता है। पूरे समाज का विकास उनके मन में है। वे पूरी समाज की समृद्धि की सुरक्षा की कामना करते हैं। उनकी पूरी भागीदारी समाज के कल्याण के लिए ही है। वे समाज के उन राजनीतिक समूहों से भी बचने की कोशिश करते हैं जो उनपर हावी होने की कोशिश करते हैं। हमारी महिलाएँ लोगों को ये भी निर्देशित करती है कि हमें उन संकीर्ण राजनीतिक दबाव समूहों से ऊपर उठना है जो पीड़ितों की मदद नहीं करती।

एक बात ध्यान देने योग्य है कि हालांकि हमने महिला सशक्तिकरण का जो उल्लेख किया है उसपर विचार करे तो पाएंगे कि महिलाओं द्वारा किया गया काम यह किस प्रकार पूरी तरह अपर्याप्त है। पंचायतों, जिला परिषदों में महिला प्रतिनिधित्व के रूप में ज़्यादा कटौती नहीं की गई है। जितना महिला प्रतिनिधित्व का भ्रष्ट राजनीतिक संस्कृति से बाहर नहीं आ सके हैं। इस प्रकार इनका प्रभाव इन संस्थानों में ह्रासमान है।